CERTIFICATE OF AUTHENTICATION

I do hereby declare that the copy of the thesis submitted to the ICSSR is an authenticated copy of my thesis approved for the award of degree of Doctor of philosophy by the University of....KUMAUN...UNIVERSITY..NAINITAL (U.P.)....................

Date:

Signature

(DEVENDRA SINGH BISHT)

Authenticated by :
Supervisor/Registrar

NAINITAL

कृषि नवाचारों का प्रसार एवं अंगीकरण

(कुमायूँ के चयनित ग्रामों के कृषकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन)

कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

समाजशास्त्र विषय में
डॉक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

निर्देशक
डा० शील स्वरूप पाण्डेय
समाजशास्त्र विभाग
कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

अनुसंधित्सु
देवेन्द्र सिंह बिष्ट
शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग
कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

1985

(Year of Award 1988)

प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री देवेन्द्र सिंह बिष्ट द्वारा समाजशास्त्र में पी-एच०डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "कृषि नवाचारों का प्रसार और अंगीकरण (कुमायूं के चयनित ग्रामों के कृषकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन)" उनके द्वारा किए गए मौलिक अध्ययन पर आधारित है। श्री बिष्ट ने परिनियम 6 के अधीन मेरे निर्देशन में निर्धारित अवधि तक कार्य किया है एवं इस कार्य के लिए समाजशास्त्र विभाग में उनकी उपस्थिति 200 दिवस से अधिक की रही है।

(डा० गोपाल कृष्ण अग्रवाल)
अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग,
कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल

निर्देशक- (डा० शील स्वरूप पाण्डेय)
समाजशास्त्र विभाग
कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल।

आमुख

भारत में ग्रामीण विकास को उपयुक्त दिशा देने के उद्देश्य से समय-समय पर अनेक आन्तरिक एवं वाह्य स्रोतों पर आधारित विकास कार्यक्रम क्रियान्वित किये गए । कुमायूं क्षेत्र भी इन प्रयासों का अपवाद नहीं रहा है । व्यावहारिक रूप से कुमायूं में कृषि एक व्यवसाय न होकर वस्तुतः एक जीवन-विधि है जो पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से सरकार द्वारा क्रियान्वित विशिष्ट एवं सामान्य कार्यक्रमों के पश्चात् भी अधिक वैज्ञानिक स्वरूप ग्रहण नहीं कर सकी । पर्वतीय क्षेत्र खाद्यान्न-उत्पादन के क्षेत्र में पहले से ही अत्यधिक पिछड़ा हुआ रहा है तथा यहां के निवासियों को परिवहन सम्बन्धी जटिलताओं के कारण मैदानी क्षेत्रों से ऊंची कीमतों पर खाद्यान्नों का आयात करना पड़ता है । इस स्थिति में कृषि उत्पादन बढ़ाने तथा स्थानीय साधनों के माध्यम से रोजगार के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में "भारत-जर्मन कृषि विकास परियोजना" का आरम्भ अल्मोड़ा जनपद में किया गया । यह जनपद कृषि के क्षेत्र में पार्वत्य क्षेत्र का प्रमुख प्रतिनिधि है क्योंकि पर्वतीय भाग के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा यहां पर कृषि योग्य समतल व सिंचित भूमि की बहुलता है । इसी तथ्य को ध्यान में रखकर वैज्ञानिक विधि के माध्यम से कृषि विकास का प्रयास इस जनपद में किया गया । सत्य तो यह है कि कृषि विकास से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों का प्रभाव कृषि नवाचारों के अंगीकरण पर ही निर्भर करता है, अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कृषि नवाचारों के अंगीकरण की वास्तविक स्थिति एवं उससे सम्बद्ध विभिन्न दशाओं का निष्पक्ष मूल्यांकन किया जाए ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध समाजशास्त्र विषय में कुमायूँ विश्वविद्यालय की डॉक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि के लिए श्रद्धेय गुरुदेव डॉ० शील स्वरूप पाण्डेय के निर्देशन में पूर्ण किया गया है । डॉ० पाण्डेय ने ही मुझे कार्य करने के लिए प्रेरणा दी, निरन्तर स्नेह देकर मेरा उत्साह बढ़ाया तथा अपने व्यस्त जीवनचर्या के अमूल्य समय की चिन्ता न करते हुए पग-पग पर निर्देशन एवं ज्ञान देकर मेरे साहस को बनाए रखा । इसके लिए मैं उनका अत्यधिक आभारी हूँ ।

प्रस्तुत शोध की सफलता के लिए मैं अपने पूज्य गुरुदेव डॉ०गोपाल कृष्ण अग्रवाल, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल का सहृदय आभारी हूँ जिनके प्रेरक सुझावों, संरक्षण, सहयोग एवं अपार स्नेह से ही यह अध्ययन सम्भव हो सका ।

इसी सन्दर्भ में, मैं डॉ० गोविन्द लाल साह, मानचित्रकार, भूगोल विभाग, कुमायूँ विश्वविद्यालय के प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूँ । मैं उन सभी दिशा बोधकों, विद्वानों एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाधिकारियों का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग से मुझे अनेक महत्व-पूर्ण तथ्य प्राप्त हो सके । साथ ही मैं प्रस्तुत अध्ययन से सम्बद्ध उत्तरदाताओं का भी आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने बड़े उत्साह तथा निर्भीकता के साथ मुझे अपेक्षित सूचनाएं प्रदान कीं । शोध कार्य से सम्बद्ध विश्लेषण में जिनकी कृतियों एवं जिन विभागों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है, उन सभी का मैं हृदय से आभारी हूँ ।

शोध-कार्य पूर्ण करने में, मैं श्री चन्द्र लाल साह, नरेन्द्र बिष्ट, कैलाश सिंह, कु० मंजु साह एवं कु० सुनीता बिष्ट का भी आभारी हूँ, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता की । इस शोध प्रबन्ध के टंककर्त्ता श्री जी०सी० नैनवाल भी हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं जिनके आत्मीय प्रयास से ही यह कार्य समय से सम्पन्न हो सका ।

देवेन्द्र सिंह बिष्ट

देवेन्द्र सिंह बिष्ट

विषयानुक्रमणिका

अध्याय : 1 | पृष्ठ संख्या

सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य और परिचयात्मक विवरण | 1-88

प्रस्तावना; प्रसार और अंगीकरण : साहित्य का पर्यवलोचन। भारतीय कृषि विकास परियोजनाओं का विवेचन। भारत-जर्मन कृषि विकास परियोजना [अगाडा]।

अध्याय : 2

पद्धतिशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य | 89-109

शोध के उद्देश्य; परिकल्पनाएं; समग्र एवं प्रतिचयन; शोध प्रविधि एवं साक्षात्कार; अंकन तकनीक- संस्तुत व्यवहारों के अंगीकरण पर दिए गए अंक, वैयक्तिक एवं पारिवारिक विशेषताएं; सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताएं, अर्न्तव्यवस्थित साझेदारी, सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक अभिवृत्तियां; सामग्री का विवेचन।

अध्याय : 3

सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि | 110-146

कुमायूं का संक्षिप्त परिचय; जनपद अल्मोड़ा का संक्षिप्त परिचय; चयनित सूचनादाताओं का विवरण; आयु, जाति, परिवार का आकार, शैक्षणिक स्तर, कृषि एवं सहायक व्यवसाय, भूमि, पशु-धन, घरेलू उपयोग की वस्तुएं, आवासीय स्थिति, जन-संचार माध्यम का उपयोग, ऋण के स्रोत तथा राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों में सहभागिता।

अध्याय : 4 पृष्ठ संख्या

नवाचारों का तुलनात्मक अंगीकरण तथा सम्बद्ध सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारक 147-195

विभिन्न गांवों में कृषि नवाचारों के अंगीकरण की तुलनात्मक स्थिति- विकसित व कम विकसित गांवों में; विभिन्न चरों के साथ अंगीकरण का सह-सम्बन्ध; वैयक्तिक एवं पारिवारिक विशेषताएं- आयु, शिक्षा तथा परिवार प्रकार से सह-सम्बन्ध। सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताएं- जाति, भूमि की मात्रा, आर्थिक प्रस्थिति तथा व्यवसाय से सह-सम्बन्ध। अन्तर्व्यवस्थित साझेदारी- जनसंचार के उद्भासन, परिवर्तनकारी अभिकर्ता, मंत्रणा नेता एवं बाह्य दुनिया से सम्पर्क के साथ सह-सम्बन्ध। सामाजिक अभिवृत्तियाँ- शिक्षा के प्रति महत्त्वाकांक्षा, स्त्री सहभागिता, लौकिक अनुस्थापन तथा समानुभूति से सह-सम्बन्ध। आर्थिक अभिवृत्तियाँ- नियोजन अनुस्थापन एवं सम्भावित दुगनी आय के साथ सह-सम्बन्ध। राजनीतिक अभिवृत्तियाँ- राजनीतिक ज्ञान एवं राजनीतिक सहभागिता से सह-सम्बन्ध।

अध्याय : 5

नवाचारों की सूचना वाहिकाएं 196-252

नवाचारों की सूचना वाहिकाएं; जनसंचार की विभिन्न वाहिकाओं से सम्पर्क; परिवर्तनकारी अभिकर्ताओं से सम्पर्क एवं प्रकृति; मंत्रणा नेता से सम्पर्क एवं प्रकृति।

अध्याय : 6 — पृष्ठ संख्या

निष्कर्ष एवं सामान्यीकरण — 253-279

निष्कर्ष; परिकल्पनाओं का परीक्षण; पार्वत्य क्षेत्र में कृषि से सम्बन्धित समस्याएँ; कृषि सम्बन्धित समस्याओं हेतु सुझाव ।

परिशिष्ट — 280-316

- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
- साक्षात्कार अनुसूची का प्रारूप
- शब्द-संक्षेप
- पारिभाषिक शब्दों का अंग्रेजी अर्थ ।

...

सारणी सूची

क्रम संख्या	सारणी सं०	सारणी शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	3·1	सूचनादाताओं की आयु	119
2	3·2	जातीय आधार पर सूचनादाताओं का वर्गीकरण	121
3	3·3	परिवार में सदस्यों की संख्या	123
4	3·4	सूचनादाताओं का शैक्षिक स्तर	125
5	3·5	कृषि एवं सहायक व्यवसाय	127
6	3·6	भूमि के आधार पर सूचनादाताओं का विवरण	130
7	3·7	पशु-धन के आधार पर सूचनादाताओं का विवरण	132
8	3·8	घरेलू उपयोग के वस्तुओं की प्रकृति	133
9	3·9	सूचनादाताओं की आवासीय स्थिति	135
10	3·10	जनसंचार माध्यमों के उपयोग की प्रकृति	137
11	3·11	ऋण के स्रोतों के आधार पर सूचनादाताओं का वर्गीकरण	139
12	3·12	राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में सहभागिता का स्तर	142
13	4·1	विकसित गांवों में कृषि नवाचारों का अंगीकरण	149
14	4·2	कम विकसित गांवों में कृषि नवाचारों का अंगीकरण	150
15	4·3	आयु के साथ अंगीकरण का सह-सम्बन्ध	154
16	4·4	शिक्षा के साथ सह-सम्बन्ध	156
17	4·5	परिवार का प्रकार एवं अंगीकरण	158
18	4·6	जाति के साथ अंगीकरण का सह-सम्बन्ध	160
19	4·7	भूमि की मात्रा से सह-सम्बन्ध	162
20	4·8	आर्थिक प्रस्थिति से सह-सम्बन्ध	164

21	4.9	व्यवसाय एवं अंगीकरण	166
22	4.10	जनाधार के उद्भासन से अंगीकरण का सह-सम्बन्ध	169
23	4.11	परिवर्तनकारी अभिकर्त्ताओं के सम्पर्क से अंगीकरण का सह-सम्बन्ध	170
24	4.12	वाह्य दुनिया से सम्पर्क तथा अंगीकरण	172
25	4.13	मत्था नेता सम्पर्क तथा अंगीकरण	174
26	4.14	शिक्षा के प्रति महत्वाकांक्षा तथा अंगीकरण	177
27	4.15	स्त्री-सहभागिता एवं अंगीकरण	179
28	4.16	लौकिक अनुस्थापन तथा सह-सम्बन्ध	180
29	4.17	समानुभूति एवं सह-सम्बन्ध	182
30•	4.18	नियोजन अनुस्थापन तथा सह-सम्बन्ध	184
31•	4.19	सम्भावित दुगनी आय के बाद उत्पादन कार्यों में व्यय तथा सह-सम्बन्ध	185
32•	4.20	राजनैतिक ग्राम के साथ अंगीकरण का सह-सम्बन्ध	187
33	4.21	राजनीतिक सहभागिता तथा सह-सम्बन्ध	188
34	5.1	कृषि व्यापारों की सूचनातालिकाएं	199
35	5.2	रेडियो श्रोताओं के आधार पर वर्गीकरण	203
36	5.3	रेडियो सुनने की आवृत्ति के आधार पर वर्गीकरण	205
37	5.4	रेडियो कार्यक्रमों के आधार पर वर्गीकरण	207
38	5.5	रेडियो सुनने के स्थान के आधार पर वर्गीकरण	209
39	5.6	लिखित साहित्य पढ़ने के आधार पर वर्गीकरण	213
40	5.7	लिखित साहित्य पढ़ने की आवृत्ति के आधार पर वर्गीकरण	215
41	5.8	लिखित साहित्य के स्रोत के आधार पर वर्गीकरण	218
42	5.9	गरौर ग्राम में परिवर्तनकारी अभिकर्त्ताओं की भूमिका	222
43	5.10	मछलीशहर ग्राम में परिवर्तनकारी अभिकर्त्ताओं की भूमिका	224

44	5·11	पठाण ग्राम परिवर्तनकारी अभिकर्त्ताओं की भूमिका	226
45	5·12	तैलीघाट ग्राम में परिवर्तनकारी अभिकर्त्ताओं की भूमिका	228
46	5·13	आरे ग्राम में परिवर्तनकारी अभिकर्त्ताओं की भूमिका	230
47	5·14	हरसिला ग्राम में परिवर्तनकारी अभिकर्त्ताओं की भूमिका	232
48	5·15	उत्तरदाताओं का परामर्श लेने के आधार पर विवरण	239
49	5·16	परामर्श लेने के विभिन्न क्षेत्र	242
50	5·17	परामर्श लेने के कारण	246

•••